Date
Page

"काव्य का स्वरूप"

भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य के स्वरूप पर विद्वानों ने पर्याप्त विचार-विमर्श किया है। जिससे विभिन्न काव्य सम्प्रदायों का विकास हुआ तथा काव्य-लक्षण निर्धारित करने का प्रयास हुआ है। संस्कृत आचार्यों ने काव्य की जो परिभाषा निर्धारित किए हैं; उसे सर्वमान्य नहीं कहा जा सकता।- आचार्य भामह ने अपने 'काव्यालंकार' में काव्य इस प्रकार परिभाषित किया है— "शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्" अर्थात् शब्द और अर्थ के 'सहित-भाव' को काव्य कहते हैं। यहाँ पर 'सहित' शब्द अस्पष्ट है। इसके दो अर्थ -(i) 'साहित्यिक सामंजस्य और (ii) हित सहित' हो सकते हैं। यदि पहला अर्थ लिया जाय तो आचार्य भामह की परिभाषा का अभिप्राय होगा, "शब्द और अर्थ के 'साहित्यिक सामंजस्य' को काव्य कहते हैं।" किन्तु दूसरा अर्थ लिया जाए तब इस परिभाषा का तात्पर्य होगा कि, "ऐसा शब्दार्थ जो लोक कल्याणकारी हो, सबका हित करने वाला हो, वह काव्य है।" इससे स्पष्ट होता है कि आचार्य भामह शब्द और अर्थ के सामंजस्य पर जोर देते हैं। अर्थात् कविता न तो केवल शब्द-चमत्कार है और न ही केवल अर्थ का सौष्ठव। उसमें सुन्दर, कलात्मक और सरस शब्द प्रयुक्त होने चाहिए जो उचित, भावपूर्ण, अर्थ को व्यक्त करने वाले हों।

आचार्य दण्डी ने अपने ग्रन्थ "काव्यादर्श"

Scanned with CamScanner

Date ——
Page ——

में काव्य की परिभाषा निम्न रूप में दी है—
"शरीरंतावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली।" अर्थात् इष्ट अर्थ से युक्त पदावली तो उसका (काव्य का) शरीर मात्र है। वस्तुत: सार रूप में यह कहा जा सकता है कि दण्डी के अनुसार वह शब्दार्थ जो अलंकार युक्त हो, काव्य है। अलंकार ~~विहीन~~ विहीन शब्दार्थ दण्डी के विचार से काव्य नहीं कहा जा सकता।

रीति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य वामन ने अपने ग्रंथ 'काव्यालंकार सूत्रवृत्ति' में काव्य को परिभाषित करते हुए लिखते हैं, "गुणालंकृतयो शब्दार्थयो काव्य शब्दो विद्यते।" अर्थात् गुण और अलंकार से युक्त शब्दार्थ ही काव्य के नाम से जाना जाता है। काव्यशास्त्र के प्रमुख आचार्य मम्मट ने अपने ग्रन्थ 'काव्यप्रकाश' में काव्य की निम्न परिभाषा दी है, "तद दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि।" अर्थात् काव्य होता है वह शब्द और अर्थ जो दोष से रहित हो, गुण से मंडित हो तथा कभी-कभी अलंकार से रहित भी हो सकता है। आचार्य मम्मट की परिभाषा के आधार पर काव्य के निम्न लक्षण सामने आते हैं—

(i) शब्दार्थौ – अर्थात् काव्य शब्द और अर्थ का योग है।
(ii) अदोषौ – अर्थात् काव्य दोष रहित होना चाहिए।
(iii) सगुणौ – अर्थात् काव्य गुणयुक्त होना चाहिए।
(iv) अनलंकृति पुनः क्वापि – अर्थात् काव्य में अलंकार अनिवार्य नहीं है।

'साहित्य-दर्पण' के रचनाकार आचार्य विश्वनाथ के अनुसार, "वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।"

Scanned with CamScanner

Date
Page

अर्थात् रस से पूर्ण वाक्य ही काव्य है। आचार्य विश्वनाथ की इस परिभाषा को स्पष्ट करते हुए बाबू गुलाबराय ने लिखा है कि, "रसात्मकं' से काव्य की अनुभूति पक्ष की और 'वाक्यं' से कलापक्ष की अभिव्यंजना होती है पर इस परिभाषा में रस की व्याख्या अपेक्षित है।"

'रस गंगाधर' के रचयिता पण्डितराज जगन्नाथ के अनुसार, "रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।" अर्थात् रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द ही काव्य है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं।" आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हृदय की मुक्तावस्था का अभिप्राय हृदय का अपने-पराए की भावना से मुक्त होना है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, "किसी प्रभावोत्पादक और मनोरंजक लेख, बात या वक्तृता का नाम कविता है।"

बाबू गुलाबराय के अनुसार, "काव्य संसार के प्रति कवि की भाव प्रधान मानसिक प्रतिक्रियाओं की श्रेय को प्रेय देने वाली अभिव्यक्ति है।"

मैथ्यू ऑर्नल्ड के अनुसार, "Poetry at bottom is the criticism of life." अर्थात्

"कविता मूल रूप में जीवन की आलोचना है।"
एस० टी० कॉलरिज के अनुसार, " Poetry is the best word in best order." अर्थात् सर्वोत्तम व्यवस्था में सर्वोत्तम शब्द ही कविता हैं।

हडसन के अनुसार, " Poetry is the interpretation of life through imagination and emotion."

अर्थात् कविता कल्पना और संवेग के द्वारा जीवन की व्याख्या है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि काव्य के स्वरूप को स्पष्ट करने वाले निम्नलिखित सामान्य लक्षण हैं— मानवीय अनुभूति, भाषा द्वारा उसकी अभिव्यक्ति, तथा अभिव्यक्ति में कलात्मकता। अर्थात् इस आधार पर कहा जा सकता है कि मानवीय अनुभूतियों की भाषा के माध्यम से की गई रसात्मक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति ही कविता है।

डॉ० राकेश कुमार
हिन्दी विभाग
शेरशाह महाविद्यालय, सासाराम, रोहतास

Scanned with CamScanner